This PDF of 'IGNOU IQ Hindi' is not for selling or sharing, otherwise legal action can be taken against you.

ASSIGNMENT

BPSC - 112

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

PDF By Suraj Kumar Sir (8521027286/6205717642) …….visit our website www.ignouiqhindi.com

हमारे यहाँ Handwritten Assignments/Synopsis/Project बनाया जाता है - 62057107642/8521027286

BPSC-112 : पारंपरिक राजनीतिक दर्शन –I

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BPSC-112**
सत्रीय कार्य कोड : **BPSC-112/ASST/TMA/2025-26**
अधिकतम अंकः **100**

इस सत्रीय कार्य के तीन भाग हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्न वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) *ब्राह्मणवादी* परंपरा में प्रचलित चार लक्ष्यों (खोजों) के संदर्भ में एक लेख लिखिए। 20

2) *श्रमणिक* परंपरा में राजनीतिक विचारों की जाँच कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्न मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

1) इस्लामी परंपरा की *ब्राह्मणवादी* परंपरा से तुलना कीजिए। 10

2) सिख परंपरा और गुरू नानक पर विस्तापूर्वक वर्णन कीजिए। 10

3) वेद व्यास और 'महाभारत' पर चर्चा कीजिए। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्न लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

1) बौद्ध राजनीतिक दर्शन के अनुसार संप्रभुता के सात पदचिन्ह् क्या है? व्याख्या कीजिए। 6

2) जिया–उद्दीन–बरनी के विचारों में राजनीति औचित्य और यथार्थवाद के विचार का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए। 6

3) अबुल फज़ल की प्रमुख रचनाओं और क्रियाविधि का वर्णन कीजिए। 6

4) अक्का महादेवी की श्री सैलम् की यात्रा की जांच कीजिए। 6

5) महिलाओं के लिए कबीर के विचार क्या थे? व्याख्या कीजिये। 6

सत्रीय कार्य – 1

1. ब्राह्मणवादी परंपरा में प्रचलित चार लक्ष्यों के सन्दर्भ में एक लेख लीजिये।

उत्तर : वैदिक परंपराएँ, जिनमें अनुष्ठानिक बलिदान, भजन और पुरोहिती अधिकार पर ज़ोर दिया गया था, प्राचीन भारत में ब्राह्मणवादी धर्मों के विकास की नींव थीं। ब्राह्मण, जो जटिल यज्ञों (बलिदान) को संपन्न करने और वेदों जैसे पवित्र ग्रंथों के संरक्षण में सहायक थे, ने इन मान्यताओं के संरक्षण और प्रसार में योगदान दिया। विशेष रूप से उपनिषदों ने, बाह्य कर्मकांडों से आंतरिक आध्यात्मिक ज्ञान पर ज़ोर देकर, समय के साथ ब्राह्मणवादी धर्म के दार्शनिक विकास में सहायता की। द्वितीय शहरीकरण के दौरान समाज के विकास के साथ-साथ मंदिर पूजा, भक्ति प्रथाएँ और स्थानीय मान्यताएँ, सभी ब्राह्मणवादी परंपराओं में समाहित हो गईं। इस विकास का भारत की सामाजिक संरचना, धार्मिक रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक पहचान पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, साथ ही इसने शास्त्रीय हिंदू धर्म की नींव भी रखी।

ब्राह्मणवादी परंपरा में जीवन के चार प्रमुख लक्ष्य **धर्म (नैतिक कर्तव्य), अर्थ (भौतिक समृद्धि), काम (इच्छा और आनंद) और मोक्ष (मुक्ति)** हैं, जो एक समग्र और सार्थक जीवन जीने के लिए आवश्यक माने जाते हैं। इन लक्ष्यों का सामंजस्यपूर्ण पालन व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है, जिसमें धर्म को सबसे प्रमुख माना गया है।

ब्राह्मणवादी परंपरा के चार लक्ष्य (पुरुषार्थ)

- **धर्म:** धर्म का अर्थ है नैतिक कर्तव्य, सही आचरण और सामाजिक व्यवस्था का पालन करना। इसमें व्यक्ति के जीवन के सभी पहलुओं के लिए निर्धारित नियमों और जिम्मेदारियों को निभाना शामिल है, जैसे कि अपने वर्ण और आश्रम के अनुसार जीवन जीना।
- **अर्थ:** इसका अर्थ है भौतिक समृद्धि और धन की प्राप्ति। इसका उद्देश्य व्यक्ति के भौतिक कल्याण और उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना है, ताकि वह सामाजिक और आर्थिक रूप से सुरक्षित रह सके। अर्थ का उपयोग धर्म और मोक्ष के लिए भी किया जाता है।
- **काम:** काम का अर्थ है मानवीय इच्छाएं, आनंद और वासना। इसका तात्पर्य जीवन में सुख और संतुष्टि प्राप्त करना है। हालांकि, काम को धर्म और अर्थ के अधीन माना जाता है, और इसे हमेशा नैतिक और सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीके से पूरा किया जाना चाहिए।
- **मोक्ष:** यह जीवन का अंतिम लक्ष्य है, जिसका अर्थ है भौतिक बंधनों से मुक्ति और आध्यात्मिक पूर्णता की प्राप्ति। मोक्ष को सभी पुरुषार्थों के पूर्ण होने पर ही प्राप्त किया जा सकता है और यह जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाता है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यह ब्राह्मणवादी परंपरा के चार लक्ष्य हैं और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीके ब्राह्मणवाद के विभिन्न सिद्धांतों और प्रथाओं में पाए जाते हैं।

2. श्रमणिक परंपरा में राजनितिक विचारों की जांच कीजिये।

उत्तर : प्राचीन भारत में श्रमण परंपराएँ उन तपस्वियों द्वारा शुरू की गईं जिन्होंने जीवन और ब्रह्मांड के सत्य की खोज के लिए सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया था। इनमें कई समूह, संप्रदाय और विभिन्न प्रकार के मत शामिल थे। इनमें सबसे प्रसिद्ध बौद्ध, जैन, भौतिकवादी लोकायत और आजीविक जैसे समूह थे

ब्राह्मणवादी व्यवस्था में ब्राह्मणों को देवताओं और अनुयायियों के बीच मध्यस्थ का विशेषाधिकार प्राप्त था और उन्हें वेदों में पाई जाने वाली पवित्र विद्या का रक्षक माना जाता था। श्रमणों ने ब्राह्मणों के अधिकार को अस्वीकार कर दिया और ब्राह्मणों के कर्मकांडीय रूढ़िवादी विचारों का विरोध किया।

मुख्य भाग

श्रमणों द्वारा लाया गया धार्मिक आंदोलन

- **नए धर्मों का उदय:** सभी श्रमण संप्रदायों ने वैदिक ग्रंथों के दर्शन की सर्वोच्चता को नकार दिया। उनमें से कुछ, जैसे बुद्ध और महावीर, ने ध्यान के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया और सत्य का साक्षात्कार करने के बाद अपने अनुयायियों को जीवन के सही मार्ग का प्रचार किया
- **सत्य के अर्थ को सरल बनाना:** वैदिक साहित्य में सत्य की अवधारणा आध्यात्मिक और आम लोगों के लिए समझने में जटिल थी। जैसे बृहदारण्यक उपनिषद में सत्य को ब्रह्म के समान माना गया है, जो सर्वोच्च सार्वभौमिक सिद्धांत, ब्रह्मांड में परम सत्य का बोध कराता है। श्रमणों ने सत्य के अर्थ को सरल बनाने का प्रयास किया, जैसे बुद्ध ने कहा कि चार आर्य सत्य हैं:
    - संसार दुखों से भरा है।
    - सभी दुखों का एक कारण होता है: इच्छा, अज्ञान और आसक्ति दुखों के कारण हैं।
    - दुःख को उसके कारण को नष्ट करके दूर किया जा सकता है।
    - दुखों का अंत करने के लिए सही मार्ग जानना आवश्यक है। यह मार्ग अष्टांगिक मार्ग है।
- **कर्मकांडों की अपेक्षा कर्म पर अधिक बल:** श्रमण संसार को दुःखों (दुःखों) से भरा हुआ मानते थे। वे अहिंसा और अष्टांगिक मार्गों का पालन करते थे और कर्मकांडों की अपेक्षा कर्म के सिद्धांतों में अधिक विश्वास करते थे।
- श्रमण मानते थे कि मानव जीवन का उद्देश्य मोक्ष होना चाहिए तथा वे पुनर्जन्म को अवांछनीय मानते थे।

श्रमणों द्वारा लाए गए सामाजिक परिवर्तन

- **वैश्यों और क्षत्रियों के सामाजिक समूहों की शक्ति में वृद्धि:** आर्थिक और राजनीतिक विकास के साथ, वैश्य और क्षत्रिय अधिक प्रभावशाली वर्ग बन गए।
    - ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विपरीत, बौद्ध और जैन धर्म की श्रमण परंपराओं ने सामाजिक स्थिति के लिए जन्म की धारणा को अधिक महत्व नहीं दिया, बल्कि उन्होंने वैश्यों और क्षत्रियों को अपनी ओर आकर्षित किया।
    - यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि बुद्ध और महावीर दोनों ही क्षत्रिय वर्ग से थे, लेकिन समाज की ज्वलंत समस्याओं के समाधान की खोज में वे अपने जन्म द्वारा निर्धारित सीमाओं से परे चले गए।

- **जाति व्यवस्था की अस्वीकृति:** बौद्ध धर्म और जैन धर्म के तेजी से प्रसार का एक अन्य कारण मौजूदा जाति व्यवस्था की अस्वीकृति थी।

    - श्रमण परम्पराओं के इस समतावादी दृष्टिकोण ने आम जनता को, जो शूद्रों की तरह जाति व्यवस्था में शोषित थी, जटिल ब्राह्मणवाद को छोड़ने और बौद्ध धर्म जैसे संप्रदायों के सरल सिद्धांतों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।
- **शाही संरक्षण में परिवर्तन:** मौर्य वंश के राजाओं जैसे शक्तिशाली राजाओं द्वारा इन गैर-ब्राह्मण संप्रदायों को दिए गए शाही संरक्षण ने उन्हें **अधिक सामाजिक स्वीकृति प्रदान की।** उदाहरण के लिए, कलिंग युद्ध के बाद, अशोक ने बौद्ध शिक्षाओं के आधार पर मगध की राज्य नीति के रूप में धम्म का प्रचार किया।
- **सामाजिक समरसता को बढ़ावा:** ब्राह्मणवादी परंपराओं में, विभिन्न यज्ञों को लेकर विभिन्न जनजातियों के बीच युद्ध होते थे। इससे अक्सर सामाजिक शांति भंग होती थी। श्रमण परंपराओं में अहिंसा और विश्व बंधुत्व का पालन शांतिप्रिय समाजों को अधिक आकर्षक लगा।

सत्रीय कार्य – 2

1. इस्लामी परंपरा की ब्राह्मणवादी परंपरा से तुलना कीजिये |

उत्तर : इस्लामी और ब्राह्मणवादी परंपराओं में मुख्य अंतर उनके धर्मग्रंथों, ईश्वर की अवधारणा और सामाजिक ढांचे में हैं। इस्लामी परंपरा एक एकेश्वरवादी धर्म है जो कुरान को अंतिम और एकमात्र स्रोत मानती है, जबकि ब्राह्मणवादी परंपरा (सनातन धर्म) एक बहुआयामी परंपरा है जिसमें वेदों, उपनिषदों और अन्य ग्रंथों का महत्व है और यह ईश्वर को विभिन्न रूपों में देखती है। सामाजिक रूप से, इस्लामी परंपरा में जन्म पर आधारित भेदभाव को इस्लाम के सिद्धांतों के विपरीत माना जाता है, जबकि ब्राह्मणवादी परंपरा में ऐतिहासिक रूप से जाति व्यवस्था का प्रभाव रहा है, भले ही कर्म पर जोर दिया गया हो।

धार्मिक ग्रंथ और दर्शन

- **इस्लामी परंपरा:** कुरान को अल्लाह का अंतिम और अपरिवर्तनीय शब्द माना जाता है। हदीस और शरीयत जैसे अन्य स्रोत भी महत्वपूर्ण हैं।
- **ब्राह्मणवादी परंपरा:** एक विशाल धार्मिक परंपरा है जिसमें वेदों, उपनिषदों और अन्य ग्रंथों का समूह है। इसमें भक्ति, ज्ञान और कर्म जैसे कई दर्शन शामिल हैं।

ईश्वर की अवधारणा

- **इस्लामी परंपरा:** यह एक सख्त एकेश्वरवादी धर्म है। "अल्लाह" एक और अद्वितीय है और केवल उसी की पूजा की जाती है।
- **ब्राह्मणवादी परंपरा:** यह भी एकेश्वरवाद पर केंद्रित है, जहाँ "ब्रह्म" को अंतिम सत्य माना जाता है, लेकिन इसे विभिन्न देवी-देवताओं के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है।

सामाजिक ढाँचा और नियम

- **इस्लामी परंपरा:** इस्लाम सामाजिक मुक्ति के सिद्धांत पर जोर देता है। हालांकि, ऐतिहासिक रूप से, सामाजिक भेदभाव (जैसे अशरफ और गैर-अशरफ के बीच) मौजूद रहा है।
- **ब्राह्मणवादी परंपरा:** ऐतिहासिक रूप से एक कठोर वर्ण व्यवस्था का हिस्सा रही है, हालाँकि ब्राह्मण को कर्मों से निर्धारित करने की भी बात कही गई है।

अन्य अंतर

- **इस्लामी परंपरा:** इस्लाम में 'नमाज़', 'ज़कात', 'रोजा', 'हज' जैसे पाँच स्तंभ हैं।
- **ब्राह्मणवादी परंपरा:** इसमें कई अनुष्ठान, कर्मकाण्ड और त्यौहार शामिल हैं। इसका एक प्रमुख भाग कर्मकांड और साधना है, जबकि ज्ञान और भक्ति भी इसका महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

2. सिख परंपरा और गुरु नानक पर विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये।

उत्तर : सिख परंपरा की स्थापना गुरु नानक देव जी ने 15वीं शताब्दी में की थी, जो सिख धर्म के पहले गुरु थे। उन्होंने ईश्वर की एकता, समानता, और मानवता का संदेश दिया। उन्होंने जाति प्रथा, मूर्ति पूजा, और अंधविश्वास जैसी बुराइयों का विरोध किया। 'लंगर' जैसी समानता पर आधारित संस्थाएं स्थापित कीं और "नाम जपना, कीरत करना, वंड छकना" (ईश्वर का नाम जपना, मेहनत करना और बांटा हुआ खाना) के सिद्धांतों पर जोर दिया।

गुरु नानक देव जी का जीवन

- **जन्म:** गुरु नानक देव का जन्म 1469 में तलवंडी, पंजाब (अब पाकिस्तान में) में हुआ था।
- **शिक्षाएँ:** उन्होंने 'इक ओंकार' (एक ईश्वर) का सिद्धांत दिया और सभी मनुष्यों में समानता पर बल दिया। उन्होंने धार्मिक पाखंडों का विरोध किया और समाज में फैली बुराइयों जैसे सती प्रथा, बलि प्रथा, और पर्दा प्रथा को अस्वीकार किया।
- **यात्राएँ:** उन्होंने मानवता और समानता का संदेश फैलाने के लिए कई आध्यात्मिक यात्राएँ कीं, जिन्हें "उदासियाँ" कहा जाता है।
- **उत्तराधिकारी:** उन्होंने अपने शिष्य भाई लहना को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया, जिन्हें गुरु अंगद देव के रूप में जाना गया।
- **निधन:** 1539 में करतारपुर में उनका निधन हो गया।

सिख धर्म के सिद्धांत और परंपरा

- **नाम जपना, कीरत करना, वंड छकना:** यह सिख धर्म के तीन मुख्य सिद्धांत हैं। **नाम जपना** का अर्थ है ईश्वर का नाम जपना, **कीरत करना** का अर्थ है ईमानदारी से मेहनत करना, और **वंड छकना** का अर्थ है अपनी कमाई दूसरों के साथ बाँटना।
- **लंगर:** यह एक सामुदायिक रसोई है जहाँ सभी जाति और धर्म के लोग एक साथ बैठकर भोजन करते हैं। इसका उद्देश्य समानता के सिद्धांत को स्थापित करना है।
- **गुरु ग्रंथ साहिब:** गुरु नानक और उनके बाद के गुरुओं की शिक्षाएँ गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित हैं, जो सिख धर्म का पवित्र ग्रंथ है और जिसे शाश्वत गुरु माना जाता है।

- **समानता और सेवा:** सिख धर्म में ईश्वर की नजर में सभी मनुष्य समान हैं और दूसरों की सेवा को बहुत महत्व दिया जाता है।
- **पाँच ककार:** गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा स्थापित पाँच ककार - केश, कड़ा, कृपाण, कचेरा, और कंघा - सिखों की पहचान हैं जो पवित्रता, शक्ति, और अनुशासन का प्रतीक हैं।

3. वेद व्यास और महाभारत पर चर्चा कीजिये |

उत्तर : वेद व्यास महाभारत के रचयिता हैं और स्वयं इसके एक महत्वपूर्ण पात्र भी हैं। ऋषि वेद व्यास को भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है, और उन्होंने वेदों को चार भागों में विभाजित किया था। महाभारत को उन्होंने भगवान गणेश से लिखवाया, जिन्होंने एक शर्त पर लिखना स्वीकार किया कि व्यास जी को बिना रुके श्लोक बोलते रहना होगा।

वेद व्यास

- **नाम और परिचय**: इनका मूल नाम कृष्ण द्वैपायन था, और वे ऋषि पराशर और सत्यवती के पुत्र थे। वेदों को चार भागों (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद) में विभाजित करने के कारण उन्हें 'वेद व्यास' कहा गया।
- **अवतार**: इन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है।
- **योगदान**: इन्होंने न केवल महाभारत की रचना की, बल्कि 18 प्रमुख पुराणों के लेखक भी हैं। वेदों को संकलित करके भविष्य की पीढ़ियों के लिए ज्ञान को संरक्षित किया।
- **चिरंजीवी**: हिन्दू परंपरा के अनुसार, वे सात चिरंजीवियों में से एक हैं।

महाभारत

- **रचना प्रक्रिया**: वेद व्यास ने महाभारत की रचना की, लेकिन इसे भगवान गणेश ने लिखा।
- **शर्त**: वेद व्यास ने गणेश जी के सामने एक शर्त रखी कि वे लगातार श्लोक बोलते रहेंगे और गणेश जी बिना समझे उन्हें नहीं लिखेंगे। यह एक-दूसरे के लिए एक-दूसरे को समझने के लिए था।
- **लेखन**: जब गणेश जी लिखने लगते थे, तो वेद व्यास एक कठिन श्लोक बोलते, जिससे गणेश जी को सोचने में समय लगता और व्यास जी और अधिक श्लोक बना लेते थे।
- **पात्र**: वेद व्यास स्वयं महाभारत में एक महत्वपूर्ण पात्र हैं। वह कौरवों और पांडवों के दादा हैं।
- **भगवद् गीता**: महाभारत के भीतर भगवद् गीता भी एक महत्वपूर्ण अंश है, जिसे वेद व्यास ने संकलित किया था।

सत्रीय कार्य – 3

1. बौद्ध राजनितिक दर्शन के अनुसार संप्रभुता के सात पदचिन्ह क्या है ? व्याख्या कीजिये |

उत्तर : बौद्ध राजनीतिक दर्शन के अनुसार संप्रभुता के सात पदचिह्न या 'सत्तारत्न' हैं: पहिया खजाना (कैक्कारत्न), हाथी खजाना (हाथीरत्न), घोड़े का खजाना (असररत्न), मणि खजाना (मणि रत्न), स्त्री खजाना (इत्थीरत्न), गृहपति खजाना (गहपतिरत्न) और सेनापति खजाना (चक्रावर्ती)। ये सात प्रतीक शासक की शक्ति और अधिकार का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो एक धर्मी और न्यायपूर्ण शासन की नींव हैं। ये आधुनिक लोकतांत्रिक विचार से भिन्न हैं, जहाँ सत्ता लोगों से आती है; यहाँ सत्ता को एक लौकिक और नैतिक जिम्मेदारी के रूप में देखा जाता है।

बौद्ध संप्रभुता के सात पदचिह्न:

1. **पहिया खजाना (कैक्कारत्न):** एक बहुमूल्य पहिया जो शासक के प्रभुत्व का प्रतीक है, दर्शाता है कि शासक का अधिकार चारों दिशाओं में फैला हुआ है।
2. **हाथी खजाना (हाथीरत्न):** एक शक्तिशाली हाथी, जो शासन पर नियंत्रण और प्रभावी शक्ति का प्रतीक है।
3. **घोड़े का खजाना (असररत्न):** एक फुर्तीला और शक्तिशाली घोड़ा, जो नियंत्रण और शक्ति के त्वरित उपयोग को दर्शाता है।
4. **मणि खजाना (मणि रत्न):** एक चमकीला और मूल्यवान मणि, जो शासक की शक्ति और अधिकार के नैतिक औचित्य और श्रेष्ठता का प्रतिनिधित्व करता है।
5. **स्त्री खजाना (इत्थीरत्न):** शासक की पत्नी या स्त्री साथी के रूप में, जो शक्ति के विस्तार और स्थिरता में योगदान देती है।
6. **गृहपति खजाना (गहपतिरत्न):** एक धनी और शक्तिशाली व्यापारी वर्ग का प्रतीक, जो राज्य की आर्थिक शक्ति और समृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है।
7. **सेनापति खजाना (चक्रावर्ती):** एक महान सेनापति या योद्धा, जो राज्य की रक्षा और सुरक्षा के लिए जिम्मेदार होता है।

यह सात खजाने मिलकर एक आदर्श शासक के गुणों और उसकी शक्ति के स्रोतों को दर्शाते हैं। यह एक ऐसी संप्रभुता की कल्पना है जो केवल बल पर आधारित नहीं है, बल्कि नैतिक शक्ति, न्याय और प्रजा के कल्याण पर भी टिकी हुई है।

2. जिया उद्दीन बरनी के विचारों में राजनितिक औचित्य और यथार्वाद के विचार का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये।

उत्तर : जिया उद्दीन बरनी के विचारों में राजनीतिक औचित्य और यथार्थवाद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, जहाँ वे राजनीतिक सत्ता को स्थापित और बनाए रखने के लिए नैतिकता और व्यवहार्यता पर ज़ोर देते थे। उन्होंने इस्लामी सिद्धांतों को नैतिक शासन के आधार के रूप में प्रस्तुत किया, जो शासक की वैधता सुनिश्चित करता है, जबकि उन्होंने यह भी माना कि यथार्थवाद के तहत, राज्य की स्थिरता और सामाजिक-आर्थिक स्थिरता के लिए व्यावहारिक उपाय और कुलीन वर्ग को प्राथमिकता देना भी महत्वपूर्ण है।

राजनीतिक औचित्य (Political Legitimacy)

- **नैतिक और धार्मिक शासन**: बरनी का मानना था कि शासक को नैतिक मूल्यों और इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार शासन करना चाहिए। उनका मानना था कि शासक को "अल्लाह की परछाईं" होना चाहिए और धर्म का पालन करना चाहिए।
- **न्याय और स्थिरता**: उनके विचारों का केंद्रबिंदु न्याय था, जिसे वह शासक का मुख्य कर्तव्य मानते थे। न्यायपूर्ण शासन राज्य में स्थिरता लाता है।
- **कुलीन वर्ग का महत्व**: उन्होंने तर्क दिया कि शासन की बागडोर केवल कुलीन वर्ग के लोगों के हाथों में होनी चाहिए क्योंकि वे जन्म से ही न्याय और स्थिरता के लिए उपयुक्त होते हैं।

यथार्थवाद (Realism)

- **व्यावहारिक शासन**: बरनी ने व्यावहारिक शासन की वकालत की, जिसके तहत राज्य की स्थिरता सुनिश्चित हो सके। उन्होंने तत्कालीन सुल्तानों की नीतियों का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि कैसे उनके निर्णय राज्य को प्रभावित करते हैं।
- **प्रशासनिक नियुक्तियों में यथार्थवाद**: उन्होंने "निम्न-जन्म" वाले लोगों की उच्च पदों पर नियुक्ति की कड़ी आलोचना की, क्योंकि उनका मानना था कि यह अव्यवस्था और अस्थिरता का कारण बनेगा।
- **धार्मिक और भौतिक शक्तियों का महत्व**: वे धार्मिक और भौतिक शक्तियों के महत्व से इनकार नहीं करते थे। उदाहरण के लिए, फिरोज शाह के नहरों के निर्माण को उन्होंने दीर्घकालिक लाभों के साथ एक यथार्थवादी उपाय माना।
- **बाजार नियंत्रण के उपाय**: उन्होंने बाजार नियंत्रण जैसे उपायों की सफलता को कृषि करों और उनके कठोर क्रियान्वयन पर निर्भर माना।

3. अबुल फजल की प्रमुख रचनाओं और क्रियाविधि का वर्णन कीजिये।

ऊत्तर : अबुल फजल की प्रमुख रचनाओं में **'अकबरनामा'** और **'आइने-अकबरी'** शामिल हैं, जो अकबर के शासनकाल का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती हैं। उनकी क्रियाविधि में एक इतिहासकार के रूप में घटनाओं का कालानुक्रमिक और व्यवस्थित विवरण देना, तथा प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं का सटीक और गहन विश्लेषण करना शामिल था। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता की नीति (सुलह-ए-कुल) और दैवीय प्रेरणा के सिद्धांत को भी अपनाया।

प्रमुख रचनाएँ

- **अकबरनामा:** यह अकबर के शासनकाल का आधिकारिक वृत्तांत है, जो तीन खंडों में विभाजित है।
  - **पहला खंड:** तैमूर से लेकर हुमायूँ तक के मुगल शाही परिवार का इतिहास बताता है।
  - **दूसरा खंड:** 1602 से लेकर अकबर के शासनकाल तक का इतिहास शामिल करता है।
- **आइने-अकबरी:** यह अकबरनामा का तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण खंड माना जाता है।
  - इसमें अकबर के शासन की प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था का विस्तृत और सांख्यिकीय विश्लेषण है।

    - यह अकबर के साम्राज्य के प्रशासन, सेना, न्याय प्रणाली, कर प्रणाली और धार्मिक सहिष्णुता का विस्तृत विवरण देता है।
- **बाइबल का फ़ारसी अनुवाद:** अबुल फजल ने बाइबिल का फ़ारसी अनुवाद भी किया था।

क्रियाविधि

- **इतिहास लेखन:** अबुल फजल का मानना था कि इतिहास घटनाओं का एक कालानुक्रमिक विवरण है। उन्होंने घटनाओं का सटीक और विश्वसनीय विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया।
- **व्यापक विश्लेषण:** उनकी क्रियाविधि में केवल घटनाओं को दर्ज करना ही नहीं, बल्कि उनके पीछे के कारणों और सम्राट के कार्यों की प्रेरणाओं को भी शामिल करना शामिल था।
- **प्रशासनिक विवरण:** 'आइने-अकबरी' में, उन्होंने अकबर की प्रशासनिक व्यवस्थाओं, जैसे राजस्व संग्रह तंत्र और अन्य वित्तीय प्रबंधन के प्रति एक संगठित और व्यवस्थित दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया।

4. अक्का महादेवी की श्री सैलम की यात्रा की जांच कीजिये।

उत्तर : अक्का महादेवी की श्रीशैलम की यात्रा एक आध्यात्मिक यात्रा थी जहाँ उन्होंने भगवान शिव, जिन्हें वह चेन्ना मल्लिकार्जुन कहती थीं, के साथ आध्यात्मिक मिलन प्राप्त किया। कल्याण को छोड़कर, वह श्रीशैलम के घने जंगलों में गईं, जहाँ उन्होंने एक गुफा (कादली) में तपस्या की और अंततः शिव में समा गईं।

यात्रा के मुख्य बिंदु

- **त्याग:** उन्होंने एक जैन राजा, कौशिक से विवाह करने से मना कर दिया और वस्त्रों सहित सब कुछ त्यागकर श्रीशैलम की ओर निकल पड़ीं।
- **स्थान:** उनकी यात्रा का अंतिम पड़ाव श्रीशैलम के कादली नामक जंगल में एक गुफा थी।
- **उद्देश्य:** वह अपने आराध्य चेन्ना मल्लिकार्जुन (शिव) की भक्ति में लीन थीं और उनसे मिलन चाहती थीं।
- **अंतिम मिलन:** उन्होंने उसी गुफा में तपस्या करते हुए अपना देह त्याग दिया और शिवलिंग में समा गईं, जहाँ उनका प्रेम चरम पर पहुँच गया था।

आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व

- **समानता:** उनकी भक्ति की तुलना मीराबाई की श्रीकृष्ण की भक्ति से की जाती है, क्योंकि दोनों ने अपने आराध्य के साथ समा जाने का अनुभव प्राप्त किया।
- **साहित्यिक योगदान:** उन्होंने अपने जीवनकाल में 430 से अधिक कविताएं लिखीं, जिन्हें कन्नड़ साहित्य में महत्वपूर्ण माना जाता है।
- **अक्का महादेवी गुफाएँ:** यह स्थान आज 'अक्का महादेवी गुफाएँ' के रूप में प्रसिद्ध है, जो कृष्णा नदी के पास स्थित हैं और एक पवित्र स्थल मानी जाती हैं।

5. महिलाओं के लिए कबीर के विचार क्या थे ? व्याख्या कीजिये |

उत्तर : कबीरदास के महिलाओं के प्रति विचार गहरे, व्यापक और सामाजिक सत्य पर आधारित थे। उन्होंने उस समय के समाज में महिलाओं के शोषण, बंधन और भेदभाव को खुलकर उजागर किया। उनके विचार महिलाओं को केवल सामाजिक भूमिका तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उनकी वास्तविक मानवीय गरिमा और समानता पर जोर देते हैं।

महिलाओं के लिए कबीर के प्रमुख विचार — व्याख्या सहित

1. स्त्री को सम्मान देने की शिक्षा

कबीर कहते थे कि स्त्री सम्मान की पात्र है। वे स्त्री को ऐसा माध्यम मानते हैं जिसके द्वारा संसार चल रहा है—

"नारी नरक का द्वार" जैसी कुप्रथाओं का विरोध उन्होंने बिना हिचक किया और कहा कि स्त्री को घृणा का नहीं, सम्मान का स्थान मिलना चाहिए।

व्याख्या: कबीर का मानना था कि समाज स्त्री को दोष देकर खुद अपनी गलतियों को छिपाता है। स्त्री समाज का महत्वपूर्ण स्तंभ है, इसलिए उसका आदर आवश्यक है।

2. स्त्री के बिना संसार असंभव

कबीर ने स्पष्ट कहा कि जन्म से मृत्यु तक, हर कार्य में स्त्री की भूमिका अनिवार्य है।

व्याख्या: उनका विचार था कि अगर स्त्री न हो तो मनुष्य का अस्तित्व भी संभव नहीं है। इसलिए उसे 'कमज़ोर' या 'पाप का कारण' मानना अज्ञान है।

3. स्त्री का अपमान पाप

कबीर के अनुसार, स्त्री को अपमानित करना सामाजिक और आध्यात्मिक दोनों रूपों से पाप है।

व्याख्या: वे कहते हैं कि जैसे किसी भी मनुष्य का अपमान गलत है, उसी तरह स्त्री को नीचा दिखाना मनुष्य की नैतिक कमी है।

4. अशिक्षा और अंधविश्वास से महिलाओं का शोषण

कबीर ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पुरोहितवाद और पाखंड का विरोध करते हुए बताया कि इनका सबसे बड़ा शिकार महिलाएँ होती हैं।

IGNOU IQ Hindi

ZOOM CLASS

All courses are available

PACKAGE DETAILS

- Free Study Materials
- Practice sets (HardCopy)
- Revision before Exams
- Monday to Friday Classes

JOIN NOW

CONTACT US
6205717642/8521027286

www.ignouiqhindi.Com

GUESS PAPER

5 Years Previous Questions Answers

GUESS PAPER

BPSC - 103

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

हमारे यहाँ IGNOU के सभी COURSES के Study Materials जैसे ; Guess Paper/Book Notes/ Practice Sets बहुत ही सरल भाषा में उपलब्ध है.

Our Website
Www.ignouiqhindi.Com

Phone Number
6205717642/8521027286